IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 31, Issue 9, Series 5 (September, 2026) 30-33
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

ई0 वी0 रामासामी पेरियारः दर्शन चिन्तन और सच्ची रामायण

वी0 गीता

अनुवादक का नाम– ओम प्रकाश कश्यप, कँवल भारती, देविना अक्षयवर, अशोक झा प्रकाशक का नाम– फारवर्ड प्रेस प्रकाशन स्थल– 803 दिपाली बिल्डिंग, 92 नेहरू, नई दिल्ली.

Date of Submission: 15-09-2026 Date of Acceptance: 27-09-2026

(सजिल्द)

लेखक के बारे मे– वी0 गीता नारीवादी, इतिहासविद, लेखक और अनुवादक है। ये कई वर्षों से महिला आंदोलन में रही हैं। ये जाति, शिक्षा, नारीवाद और समकालीन तमिल समाज पर अंग्रेजी और तमिल में लखेन करती रही है। इन्होने एस0वी0 राजादुरै के साथ मिलकर 'दुवड्र्स' अ नॉन–ब्राह्मण मिलीनियमः फ्रॉम अयोथी थास टू पेरियार' शीर्षक किताब लिखी है द्रविड आंदोलन और राजनीति पर इनके लेख 'इकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली' प्रकाशित होते रहते हैं।

पुस्तक के बारे मे– इस पुस्तक में मेरी रूचि का कारण पेरियार के जाति व्यवस्था और धर्म की आलोचना सम्बन्धी विचार है। प्रस्तुत पुस्तक 'ई0 वी0 रामासामी पेरियारः दर्शन चिन्तन और सच्ची रामायण' मे पेरियार के जाति–धर्म की आलोचना सम्बन्धी विचार और नारीवाद के समर्थन पर उनके विचारों का उल्लेख किया गया है। पेरियार के विपुल लखेन का बहुत छोटा अंश हिंदी में अनुदित हुआ है। पेरियार के इस पुस्तक में ऐसे चुनिंदा लखे संग्रहित है, जिनसे हिन्दी पाठक इस दक्षिण भारतीय दार्शनिक –चिन्तक से परिचित हो सकेगें। इस पुस्तक में दो खण्ड है, पहले खण्ड में पेरियार के जाति–धर्म की आलोचना सम्बन्धी विचारों का विस्तृत वर्णन किया गया है तथा उनके जाति–धर्म को समाज के लिये बुराई और ऊँच–नीच को बढावा देने सम्बन्धी विचारों का उल्लेख बहुत स्पष्ट और प्रभावशाली तरीके से किया गया है। खण्ड एक में बहुत सारे शीर्षको का उल्लेख है जैसे 'भविष्य की दुनिया– इस शीर्षक में पेरियार मानव जाति के लिये कैसी दुनिया की कल्पना करते है, विस्तृत रूपरेखा दी गई है। इसके अलावा खण्ड एक में पेरियार के 'सुनहरे बोल' भी है, जिनके माध्यम से उनके प्रतिनिधि विचारों से पाठक का पूरी तरह से परिचय हो जायेगा। पेरियार के ब्राह्मणवादी धर्म–ग्रंथो की विस्तृत व्याख्या की है, इन धर्म–ग्रंथों में क्या है इसके बारे में भी प्रस्तुत पुस्तक में उल्लेख किया गया है। इस पुस्तक के दूसरे खण्ड में 'सच्ची रामायण' पेरियार की बहुचर्चित एवं सबसे विवादास्पद कृति का उल्लेख किया गया है। पेरियार की नजर में रामायण एक धार्मिक ग्रंथ नहीं बल्कि एक राजनीतिक ग्रंथ है। पेरियार ने रामायण को कपोल कल्पना माना है। जिसकी रचना का मूल उददेश्य अनार्यो पर आर्यो, बहुजनों पर द्विजों और महिलाओं पर पुरूष के वर्चस्व की सच्ची रामायण का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही पुस्तक के अन्त में सच्ची रामायण के बारे में सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसलें को भी किताब के परिशिष्ट में जगह दी गई है।

विषय सूचीः–

खण्ड –1

भविष्य की दुनिया सुनहरे

बोल

बुद्धिवादः पाखण्ड व अंध विश्वास से मुक्ति का मार्ग

ब्राह्मणवादी धर्म ग्रंथों में क्या है? दर्शन–शास्त्र क्या

है? जाति का उन्मूलन महिलाओं के अधिकार

पति–पत्नी नहीं, बने एक दूसरे के साथी

खण्ड–2

सच्ची रामायण परिशिष्ट

सच्ची रामायण पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला

खण्ड – 1

भविष्य की दुनिया– प्रस्तुत पुस्तक मे ं भविष्य की दुनिया शीर्षक में उल्लेख किया गया है कि दुनिया कैसी थी? आज की दुनिया कैसी है? आने वाले कल की दुनिया कैसी होगी? समय के साथ–साथ कौन–कौन से परिवर्तन होगें? केवल तर्कवादी इन बातो ं को सही–सही समझ सकता है। धर्माचार्यो के लिये इन्हें समझना अत्यन्त कठिन है। धर्माचार्य मात्र उतना जानते है, जितना उन्होनें धर्मशास्त्रों और ऊट पटांग पौराणिक साहित्य को रटटा लगाते हुए समझा है। उन सब चीजो से जाना है जो ज्ञान और तर्क की कसौटी पर कहीं नहीं ठहरते। ये दिमाग के बजाय दिल से सोचते है जबकि बुद्धिवादियो ं का यह तरीका नहीं, वे ज्ञानार्जन को महत्व देते है, अनुभवो ं से काम लेते है। उन सब वस्तुओं से सीखते है जो उनकी नजर से गुजर चुकी है।

सुनहरे बोल– 'सुनहरे बोल' शीर्षक मे ं पेरियार के विचारो का चयनित संकलन प्रस्तुत किया गया है ताकि लोग यह जान सके कि पेरियार धर्म–राजनीति आदि के बारे में क्या सोचते थे? उनके कुछ उद्धरण इस प्रकार है– जो ईश्वर और धर्म में विश्वास रखता है, वह आजादी हासिल करने की कभी उम्मीद नहीं कर सकता। धर्म का आधार अंधविश्वास है। ब्राह्मणों ने शास्त्रो ं और पुराणों की सहायता से शुद्रों(वैश्या या रखैल पुत्र) को बनाया है। मनुष्य–मनुष्य बराबर है, इसलिये कोई शोषण नहीं होना चाहिए। ज्ञान का आधार सोच है, सोच का आधार तर्कवाद है।

बुद्धिवाद : पाखण्ड व अंधविश्वास से मुक्ति का मार्ग– इसमें बताया गया है कि मनुष्य को इस दुनिया में अन्य प्राणियों से बेहतर माना जाता है क्योकि उसने ज्ञान का उपयोग करते हुए काफी उन्नति की है। लेकिन हमारे देशवासियों की स्थिति इस ज्ञान का उपयोग न करने के कारण बेहद खराब हो रही है। ईश्वर, संतो, ऋषियों और अवतारों की बात को समझना मनुष्य की अपनी बुद्धि से परे है। जो भी विवेक और आत्म सम्मान के अनुरूप नहीं है, उसे छोड दिया जाना चाहिए। अगर अंधविश्वास हटा दिया जाये और धर्म को विवेक के प्रकाश में देखा जाये तो कोई धर्म जीवित नहीं रहेगा।

ब्राह्मणवादी धर्म ग्रंथों में क्या है?– इस शीर्षक के अन्तर्गत बताया गया है कि अज्ञानता का साहित्य है– ब्राह्मणवादियों का साहित्य। रामायण को एक ईश्वर की कहानी के रूप में रचा गया है। रामायण भी मनु की संहिता की तरह ही है। राम की पैदाइश राक्षसो को मारने के लिये हुई। ऐसा माना जाता है कि महाविष्णु ने राम के रूप में अवतार लिया। इस शीर्षक मे राम की पैदाइश एक बेहुदी बात कही गयी है। इस महाकाव्य में अनुशासन हीनता, वेश्यावृत्ति और आत्मसम्मान रहित दर्शन शास्त्र क्या है– इसमे अग्रणी दर्शन सिद्धांतो पर चर्चा की गई है। इसमे बताया गया कि दार्शनिक बोध और दार्शनिक

अभिव्यक्ति सत्य होती है। उसकी पुनर्व्याख्या में उसे आगे तक पहुचाने के लिये उपेक्षा की जाती है कि चीज उसी रूप में देखी जाये, जैसे कि वे है। और ठीक वैसे ही समझी जाये जैसा उनसे प्रत्याशित है। मौटे तौर पर कह सकते है। कि ज्ञान प्रकृति से, हमारे सहजानुभवो से प्राप्त होता है। इसमे बताया गया है कि ईश्वर धर्म और आत्मा की खोज और उनके अस्तित्व को वास्तविक मानने वाले लागे स्वार्थी और शोषक लागे है।

जाति का उन्मूलन– इसमे उल्लेख किया गया है जो जाति व्यवस्था जन्म के आधार पर ऊँच–नीच की शिक्षा देती है, उसे हर आधार पर नष्ट कर देना चाहिये। एक बडी आबादी आज अछूतो के रूप मे बनी हुई है और इससे भी बड़ी आबाजी भूदासो, कुलियो, घरेलू, नौकरो व गैरकानूनी बच्चो के रूप में शुद्रो के नाम पर मौजूद है। ऐसी आजादी किस काम की, जो इन भेदभावो को खत्म नही कर सकती है। ऐसा धर्म, धर्म शास्त्र और ईश्वर किसे चाहिये जो परिवर्तन नही कर सकता। महिलाओ के अधिकार– इसमे महिलाओ की निम्न दशा का वर्णन किया गया है। पुरूष स्त्री को अपनी सम्पत्ति मानता है और यही नही मानता कि पुरूष के ही समान स्त्री की भी भावनाये हो सकती है। महिलाओ को शिक्षा प्राप्त करने से क्यो रोका जाता है। महिला की दास्ता केवल पुरूषो के कारण है। पुरूषो के लिये एक महिला केवल उसकी रसोइया, उसके घर की नौकरानी, उसके परिवार का वंश आगे बढ़ाने वाली साधन है। महिला को भी अपनी पसंद से किसी को चुनने का अधिकर होना चाहिए और सम्पत्ति मे भी महिला को पुरूष के बराबर अधिकार मिलना चाहिये। पति पत्नी नही, बने एक दूसरे के साथी– विवाहित दम्पत्तियो को एक–दूसरे के साथ मैत्री–भाव से व्यवहार करना चाहिये। किसी भी मामले में पुरूषो को अपने पति होने का घमण्ड नही होना चाहिये। पत्नी को भी इस सोच के साथ व्यवहार करना चाहिये कि वह अपने पति की दासी नही है न ही रसोइया है। पेरियार विवाह या शादी जैसे शब्दो से सहमत नही थे व इसे केवल जीवन मे साहचर्य के लिये समझौता मानते थे। उनका कहना था कि विवाह के पारंपरिक रीति–रिवाजो का पालन करने के जरूरत नही है। विवाह को केवल लैंगिक समानता व स्त्री पुरूष के बीच समान व्यवहार के सिद्धांत पर अनुबधित किया जाना चाहिये।

खण्ड–2

सच्ची रामायण– सच्ची रामायण पेरियार की एक चर्चित कृति है पेरियार रामायण को धार्मिक किताब न मानकर राजनीतिक पुस्तक मानते है। रामायण की मूल अन्तर्वस्तु को उजागर करने के लिये पेरियार ने 'वाल्मीकि रामायण' के ब्राह्मणों द्वारा किये अनुवादो सहित, अन्य रामकथाओं, जैसे 'कम्ब रामायण', 'तुलसीदास की रामायण', 'बौद्ध रामायण', 'जैन रामायण' आदि के अनुवादो तथा उनसे सम्बन्धित ग्रन्थों का अध्ययन किया था। पेरियार की तमिल भाषा में लिखी पुस्तक 'रामायण पादीरंगल' में अपने अध्ययनों को निचोड प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक में तमिल भाषा में प्रकाशित हुई। इसका अंग्रेजी अनुवाद द्रविड कडगम पब्लिकेशन ने 'द रामायणः अ ट्रू रीडिंग' नाम से 1959 में प्रकाशित किया। फिर इसका हिंदी अनुवाद 1968 मे 'सच्ची रामायण' नाम से ललई सिंह यादव और राम आधार द्वारा किया गया। सच्ची रामायण में रामायण को ऐतिहासिक तथ्यो पर आधारित नहीं माना गया है, यह एक कल्पना पर आधारित पुस्तक बताई गयी है। यह एक पवित्र पुस्तक नहीं है और राम और सीता के चरित्र भी घृणित हैं। रावण एक आदर्श चरित्र का व्यक्ति वर्णित किया गया है। राम उत्तर भारतीय थे, सीता भी उत्तर भारतीय चरित्र की थी और रावण दक्षिण यानी तमिलनाडू के राजा थे। जिनकी हत्या राम द्वारा की गयी थी। इसमें राम को पाखण्डी, धूर्त, धोखेबाज, निर्दयी, पुरूषहीन तथा लोगों को छिपकर माने वाला बताया गया है और राम को सीता के चरित्र पर संदेह करने वाला भी दर्शाया गया है। सीता आरै रावण के अनैतिक सम्बन्धो का वर्णन भी इसमें किया गया है। परिशिष्टः–

सच्ची रामायण पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला– इस पुस्तक के अंत में सच्ची रामायण पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले का भी उल्लेख किया गया है। दिसम्बर 1969 को उत्तर प्रदेश सरकार ने ई0वी0 रामासामी 'पेरियार' की अंग्रेजी पुस्तक 'रामायण' को जब्त कर लिया था तथा इसके प्रकाशन पर मुकदमा कर दिया था (हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को आहत करने के आरोप में) लेकिन ललई सिंह यादव ने

जब्ती के आदेश को इलाहाबाद हाईकोर्ट में चुनौती दी और वे मुकदमा जीत गय। फिर सरकार ने हाईकोर्ट के निर्णय के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील की। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले पर 16 दिसम्बर 1976 को सर्वसम्मति से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का हवाला देते हुए राज्य सरकार की अपील को खारिज कर दिया।

मूल्यांकन– प्रस्तुत पुस्तक के पहले खण्ड में पेरियार के जो चुनिंदा लेखों, विचारों का उल्लेख किया गया है वह इस पुस्तक में पेरियार के मुख्य रूप से नास्तिक और हिन्दी विरोधी के रूप में दर्शाते है। यह गलत तो नहीं है, लेकिन उनका एकांगी चित्रण अवश्य है। उन्होनें धर्म के आधार पर होने वालेशोषण की बहुत आलाचेना की, लेकिन उसे तार्किक परिणति तक भी पहुंचाया। इस पुस्तक के लेख पाठकों को न केवल पेरियार के नजरिये से बखूबी परिचत कराते है बल्कि इसकी भी झलक प्रस्तुत करते है कि पेरियार जाति एवं पितृसत्ता के विनाश के बाद किस तरह के सामाजिक सम्बंधो की कल्पना करते थे। इन लेखों को पढते हुये स्त्री–पुरूष के बीच कैसे रिश्ते होने चाहिये, उसकी एक पूरी तस्वीर सामने आ जाती है पेरियार जाति व्यवस्था के विनाश को आधुनिक भारत के निर्माण के लिये अनिवार्य मानते थे। इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में प्रस्तुत जातिवाद का घोर विरोध और नारीवाद को बढावा देने सम्बंधी विचारों ने मुझे काफी प्रभावित किया हैं। लेकिन पुस्तक के दूसरे खण्ड में सच्ची रामायण का जो उल्लेख किया गया है वह मुझे काफी आलोचनात्मक लगा। एक तरफ जहाँ रामायण को कपोलकल्पना बताया गया है वहीं दूसरी तरफ राम और सीता को घृणित चरित्र वाले बताया गया है। सीता के चरित्र को संदेह की दृष्टि से देखा गया है। अगर रामायण एक कल्पना मात्र है, उसका वास्तविककता से कोई लनेा–देना नहीं है तो राम और सीता के चरित्र घृणित क्यों बताये गये हैं। मैं मानती हूँ कि पेरियार किसी भी जाति धर्म को नहीं मानते थे लेकिन किसी भी धर्म का अनादर करना, ईश्वर को अपमान करना और अन्य धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना गलत है। कुल मिलाकर प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम खण्ड में पेरियार के जो विचार दिये गये है वह मुझे बहुत प्रभावित करते है लेकिन दूसरे खण्ड में सच्ची रामायण में उनके विचार मुझे कुछ आलोचनात्मक लगे

पुस्तक की विशेषताये–

1. इस पुस्तक में मुख्य पृष्ठ अत्यधिक आकर्षक और प्रभावशाली है।
2. पुस्तक लेखन सरल और स्पष्ट है। इस पुस्तक में पेरियार के विचारों का संग्रह काफी प्रभावी है। और स्पष्ट तरीके से दर्शाया गया है।
3. यह पुस्तक थोडी हल्की है।
4. इस पुस्तक में लखेक और अनुवादक के बारे में भी संक्षिप्त परिचय दिया गया है।
5. इस पुस्तक में पेरियार से सम्बंधित कुछ चित्र भी दिये है जो पुस्तक पढने में रूचि को ओर बढा देते है।

सुझावः–

वैसे तो यह पुस्तक अपने आप में पूर्ण है, पर मेरे नजरियें से इस पुस्तक में कुछ कमियां है जैसे–

1. इस पुस्तक में थोडा संक्षिप्त में बताया जाना चाहिये जिससे पाठकों को सरलता से समझ आ सके।
2. पुस्तक में मुख्य पृष्ठ जिल्द थोडी कमजोर है इसे थोडी माटी होनी चाहिए।
3. पुस्तक में कुछ कठिन शब्दावली का प्रयोग किया गया है जो सरल भाषा में होनी चाहिए। यह पुस्तक हमारी जाति व्यवस्था के उन्मूलन, महिला के समान अधिकार को बढावा देती है। मैं यह पुस्तक उन सभी पाठकों को पढने का निवेदन करूंगी जो जाति व्यवस्था को हमारे समाज

के लिये बुराई मानते है, जाति–धर्म से उत्पन्न ऊँच–नीच की भावना को खत्म करना चाहते है। साथ ही महिलाओं को पुरूष के बराबर अधिकार दिलाने में विश्वास रखते है।

समीक्षकः अनुराधा